

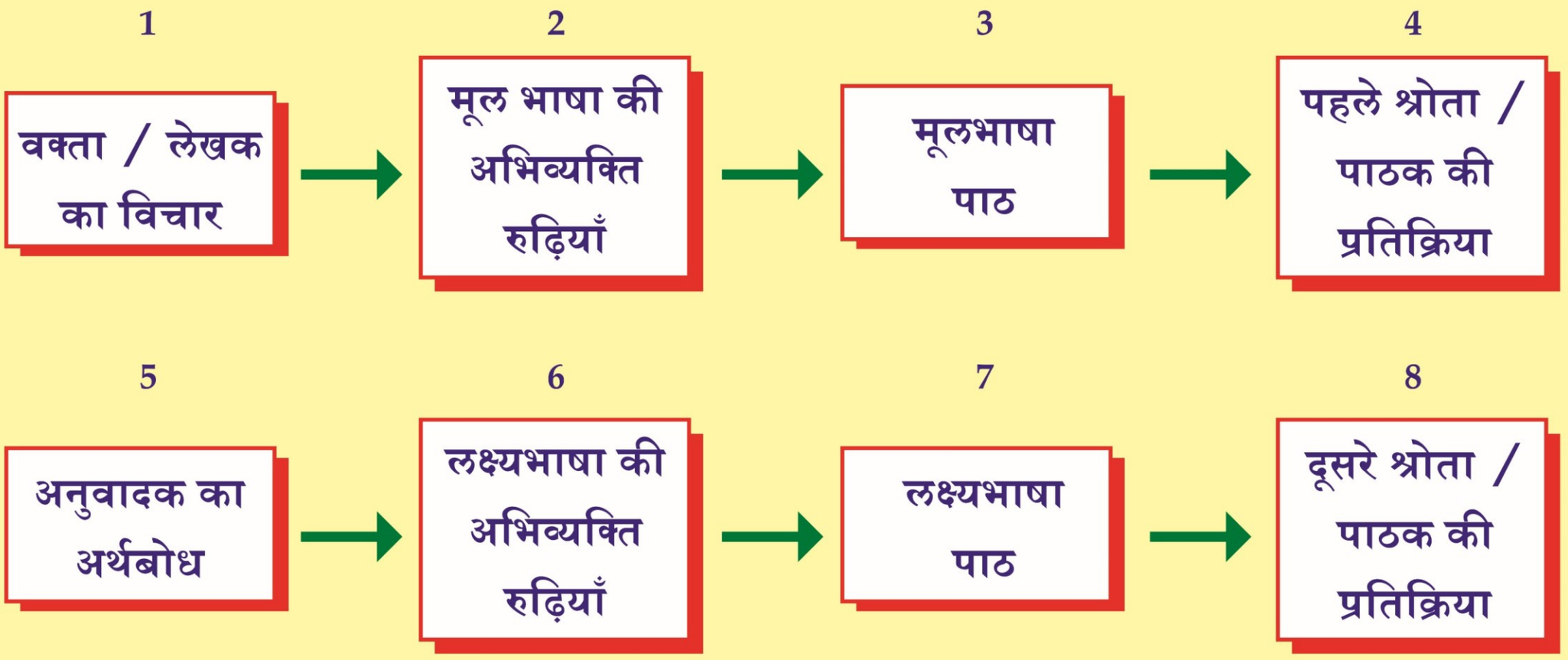
सुस्वागतम्

डॉ.कामायनी सुर्वे,अध्यक्ष,हिंदी विभाग,महात्मा फुले महाविद्यालय,पिंपरी,पुणे

अनुवाद की प्रक्रिया और प्रविधि

अनुवाद प्रक्रिया : संप्रेषण सिद्धांत से समर्थित मानचित्र

(डॉ. सुरेशकुमार - न्यूमार्क का उद्धरण)



प्रविधि - कुशलता, दक्षता

डॉ.कामायनी सुर्वे,अध्यक्ष,हिंदी विभाग,महात्मा फुले महाविद्यालय,पिंपरी,पुणे

अनुवाद - प्रक्रिया

प्रक्रिया से तात्पर्य

अनुवाद - प्रक्रिया : पश्चात्य चिंतन

(1) यूजीन नायडा .....

अनुवाद प्रक्रिया के तीन चरण

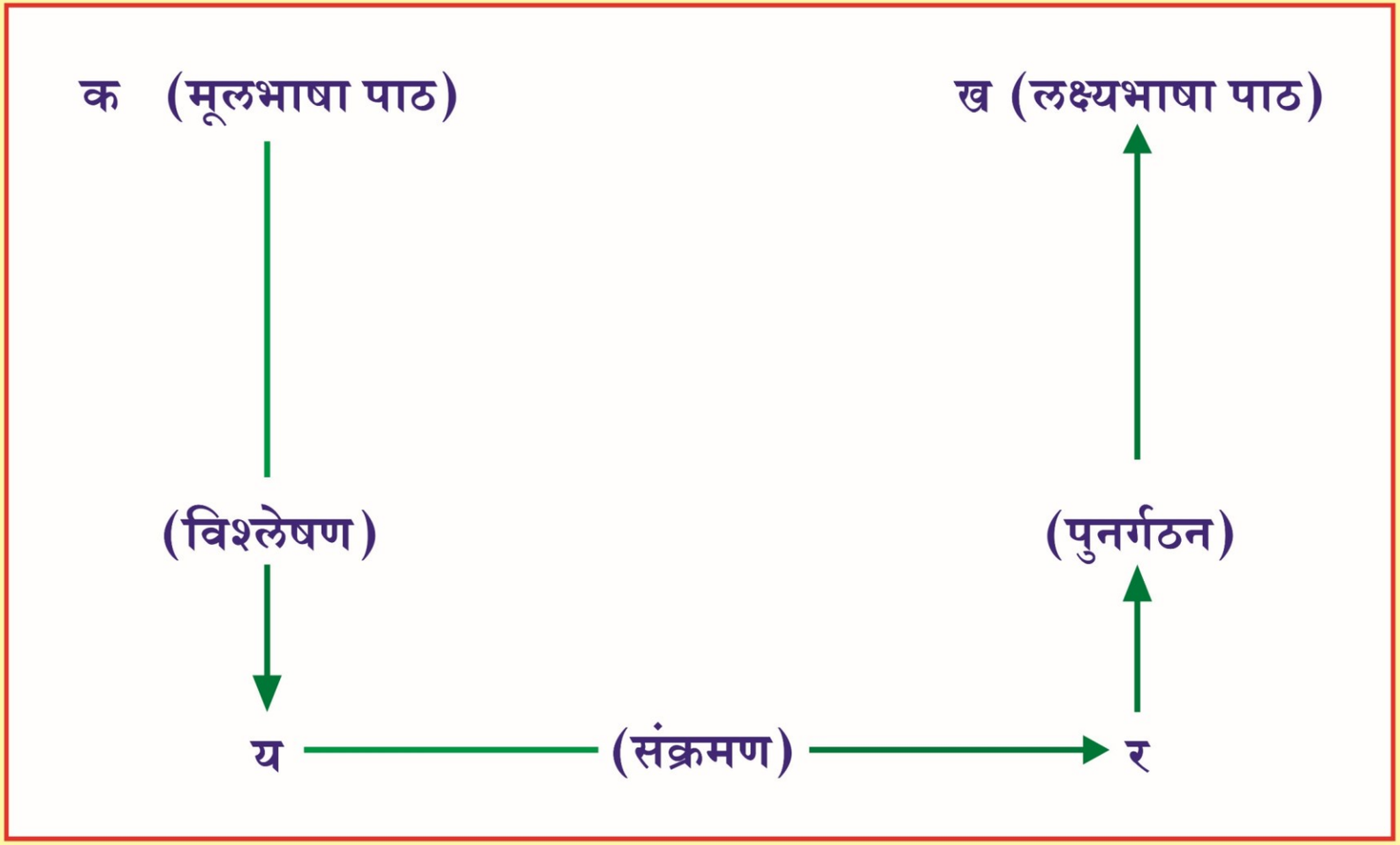
(i) **विश्लेषण**
- स्रोतभाषा पाठ का विश्लेषण
- पाठ की व्याकरणिक संरचना तथा
- शब्दों का अर्थगत विश्लेषण
- स्रोतभाषा के संदेश को ग्रहण करने की प्रक्रिया

(ii) **संक्रमण (अंतरण)**
- अर्थबोध हो जाने के उपरांत लक्ष्यभाषा में संक्रमण
- यह प्रक्रिया अनुवादक के दिमाग में
- मूलभाषा और लक्ष्यभाषा के बीच तालमेल बिठाना

(iii) **पुनर्गठन**
- स्रोतभाषा के संदेश को लक्ष्यभाषा में उसकी संरचना के नियमों तथा विधागत रुढ़ियों के अनुसार पुनर्गठित करने की प्रक्रिया
- इस प्रक्रिया से अनुवाद में स्वाभाविकता

डॉ.कामायनी सुर्वे,अध्यक्ष,हिंदी विभाग,महात्मा फुले महाविद्यालय,पिंपरी,पुणे

नायडा द्वारा बताई गई अनुवाद - प्रक्रिया का प्रारुप



य = मूलभाषा का गहनस्तरीय विश्लेषित पाठ

र = लक्ष्यभाषा में संक्रांत गहनस्तरीय पाठ

उदाहरण

(1) क = No Admission

(2) य = Admission is not allowed

(3) र = प्रवेश की अनुमति नहीं है।

(4) ख = प्रवेश वर्जित है / अंदर आना मना है।

डॉ.कामायनी सुर्वे,अध्यक्ष,हिंदी विभाग,महात्मा फुले महाविद्यालय,पिंपरी,पुणे

(2) न्यूमार्क .....

अनुवाद प्रक्रिया के चरण

(i) स्रोत भाषा पाठ → अनुवादक द्वारा स्रोतभाषा पाठ का पठण

(ii) बोधन (तथा व्याख्या) → अनुवादक द्वारा स्रोतभाषा पाठ का अर्थ बोध करना

→ स्रोतभाषा पाठ की व्याख्या करना

(iii) अभिव्यक्ति (तथा पुन:सर्जन) → लक्ष्यभाषा की प्रकृति के अनुसार मूलपाठ का पुन:सर्जन

(iv) लक्ष्यपाठ → लक्ष्यभाषा पाठ का रचना विधान

शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद → पुन:सर्जन से पहले की प्रक्रिया

उदाहरण

मूल भाषा पाठ : Judgment has been reserved.

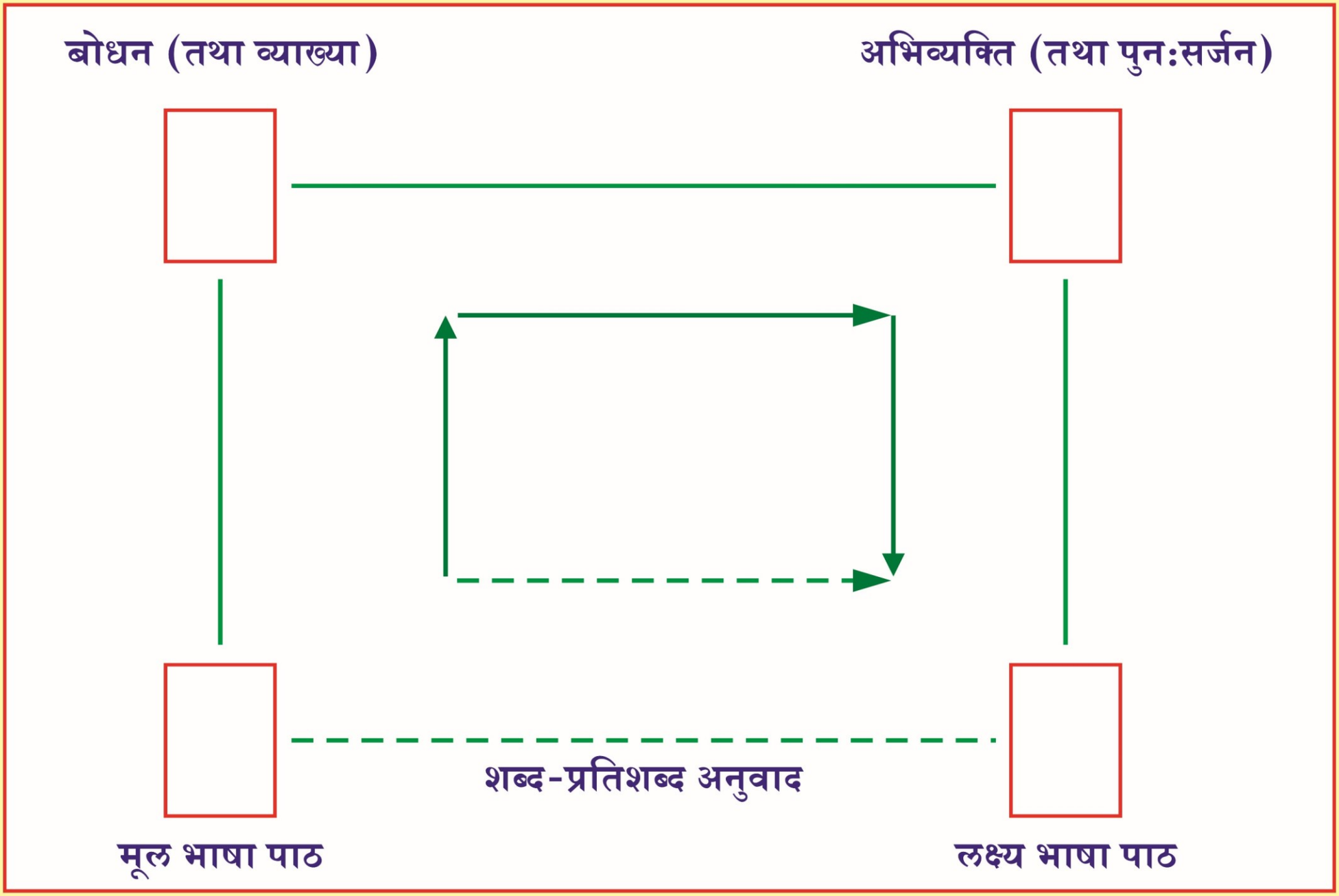
बोधन (तथा व्याख्या) : Judgment will not be announced immediately.

अभिव्यक्ति (तथा पुन:सर्जन) : निर्णय अभी नहीं सुनाया जाएगा।

लक्ष्यभाषा पाठ : निर्णय बाद में सुनाया जाएगा।

शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद :निर्णय रख लिया गया है सुरक्षित।

न्यूमार्क द्वारा बताई गई अनुवाद प्रक्रिया का प्रारुप



डॉ.कामायनी सुर्वे,अध्यक्ष,हिंदी विभाग,महात्मा फुले महाविद्यालय,पिंपरी,पुणे

(3) बाथगेट.....

बाथगेट ने अपने अनुवाद प्रक्रिया विषयक प्रारुप को 'संक्रियात्मक प्रारुप' कहा है।

(i) **मूल भाषा पाठ** → अनुवादक द्वारा मूल भाषा पाठ का पठण

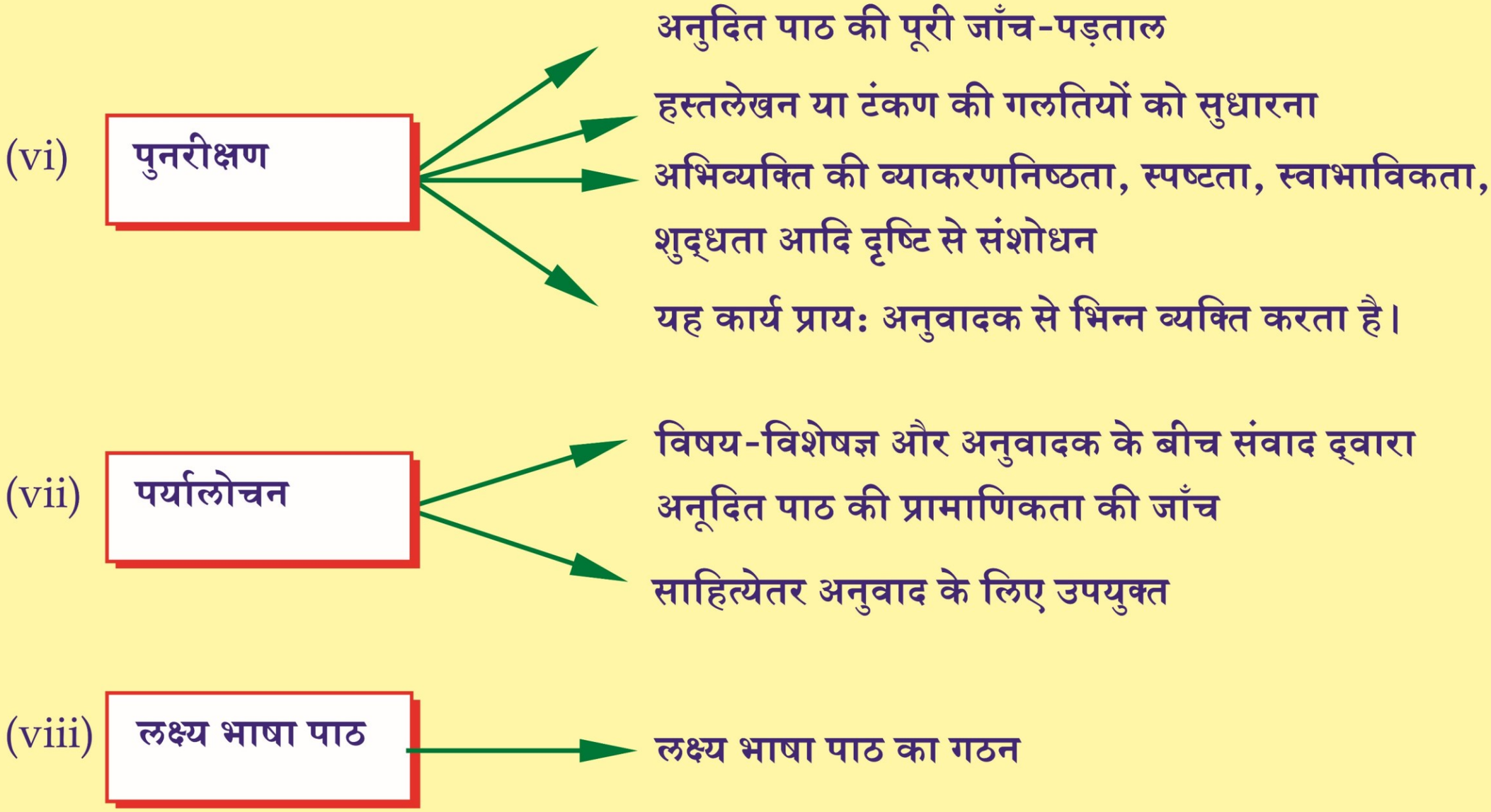
(ii) **समन्वयन**
- मूल भाषा पाठ पढ़कर मूल भाषा पाठ की नब्ज पहचानना
- अपनी मानसिकता का मूलभाषा पाठ से तालमेल बैठाना
- अनुवादक की मानसिक तैयारी का सोपान

(iii) **विश्लेषण**

(iv) **बोधन**

→ पूर्ववत (नायडा तथा न्यूमार्क की तरह)

(v) **परिभाषिक अभिव्यक्ति**
- ऐसे अंश, जो मूल पाठ के संदेश की निष्पत्ति में अन्य अंशों की तुलना में विशेष महत्त्वपूर्ण हैं।
- इनके अनुवाद पर्यायों के निर्द्धारण में विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।


(vi)
पुनरीक्षण
अनुदित पाठ की पूरी जाँच-पड़ताल
हस्तलेखन या टंकण की गलतियों को सुधारना
अभिव्यक्ति की व्याकरणनिष्ठता, स्पष्टता, स्वाभाविकता,
शुद्धता आदि दृष्टि से संशोधन
यह कार्य प्रायः अनुवादक से भिन्न व्यक्ति करता है।
(vii)
पर्यालोचन
विषय-विशेषज्ञ और अनुवादक के बीच संवाद द्वारा
अनूदित पाठ की प्रामाणिकता की जाँच
साहित्येतर अनुवाद के लिए उपयुक्त
(viii)
लक्ष्य भाषा पाठ
लक्ष्य भाषा पाठ का गठन

बाथगेट का संक्रियात्मक प्रारुप



डॉ.कामायनी सुर्वे,अध्यक्ष,हिंदी विभाग,महात्मा फुले महाविद्यालय,पिंपरी,पुणे

अनुवाद प्रक्रिया : भारतीय चिंतन

(1) डॉ. भोलानाथ तिवारी

(i) **पाठ पठन** → विषय तथा भाषागत अर्थ की दृष्टि से स्रोत भाषा पाठ का पठन

(ii) **पाठ-विश्लेषण** → कहाँ शब्द का अनुवाद करना है, कहाँ पदबंध का, कहाँ उपवाक्य का और कहाँ वाक्य का - तय करना

(iii) **भाषांतरण** → पाठ-विश्लेषण के आधार पर स्रोत भाषा की इकाइयों का लक्ष्य भाषा की इकाइयों में अंतरण

(iv) **समायोजन** →
- अंतरित पाठ का लक्ष्य भाषा की दृष्टि से समायोजन
- भाषा में सहज प्रवाह हो
- स्रोत भाषा की छाया लक्ष्य भाषा पर न हो
- अर्थ स्पष्ट हो

(v) **मूल से तुलना** →
- लक्ष्य भाषा पाठ की तुलना स्रोत भाषा पाठ से करके देखना
- अनुवाद मूल से न कम रहा हो, न अधिक
- अनुवाद अर्थ और शैली दोनों दृष्टियों से यथासंभव मूल के अनुरुप हो।

अनुवाद प्रक्रिया के मुख्य तीन चरण इस प्रकार हैं -

(1) स्रोत भाषा के पाठ का विश्लेषण अथवा उसके अर्थग्रहण की प्रक्रिया -

उदाहरण

यह राम का चित्र है।

वाक्य के तीन अर्थ

- यह चित्र राम ने बनाया है।
- इस चित्र में राम अंकित या चित्रित है।
- यह चित्र राम की अमानत है।

अनुवादक को मूल भाषा पाठ बारीकी से पढ़कर उसके संदर्भ के अनुसार इन तीनों में से एक अर्थ ग्रहण करना चाहिए।

Mohan frightens Sheela

वाक्य के हिंदी में दो समानार्थी संदेश

- मोहन शीला को ड़राता है।
- शीला मोहन से ड़रती है।

दोनों में से उचित का चयन

(2) स्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा की तुलना अथवा अर्थांतरण की प्रक्रिया -

उदाहरण

लोकोक्ति - नाच न जाने आँगन टेढ़ा।

अंग्रेजी अनुवाद - A bad carpenter quarrels with his tools.

(3) अनूदित पाठ का पुनर्गठन अथवा अर्थ संप्रेषण की प्रक्रिया -

उदाहरण

- Steps have been taen by the government to meet the situation
- स्थिति का सामना करने के लिए सरकार द्वारा कदम उठाए गए हैं।
- स्थिति का सामना करने के लिए सरकार ने कदम उठाए हैं।

- The meetings was chaired by Mr. Deshmukh

श्री देशमुख ने बैठक की अध्यक्षता की।

(हिंदी की प्रकृति के अनुसार पुनर्गठित वाक्य)

धन्यवाद !

डॉ.कामायनी सुर्वे,अध्यक्ष,हिंदी विभाग,महात्मा फुले महाविद्यालय,पिंपरी,पुणे